International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(2): 114-115

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(2): 114-115
© 2015 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-11-2014
Accepted: 14-12-2014

मोहन लाल
सहायक आचार्य, संस्कृत राजकीय महाविद्यालय नेरवा, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मोहन लाल
सहायक आचार्य, संस्कृत राजकीय महाविद्यालय नेरवा, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

पुराणानुसार गणेश–विघ्नोत्पत्तिः एक रहस्य

मोहन लाल

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र में विभिन्नपुराणानुसारी विघ्नेश्वर की विघ्नोत्पत्ति विवेच्य विषय है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में नारद ने संदेहवशात् वेदवेदांगपारंगत नारायण से प्रश्न किया कि त्रिदशेश महात्मा शंकर के पुत्र तथा विघ्नविनाशक गणपति को जो विघ्न उत्पन्न हुआ था, उसका कारण क्या था। नारद ने आश्चर्यपूर्वक कहा कि जब गणपति पूरिपूर्णतम, परात्पर, परमात्मा, गोलोक के स्वामी के स्वांश से पार्वती के गर्भ से प्रादुर्भूत हुए थे, तब उन भगवान् के मस्तक का ग्रह की दृष्टिमात्र से कट जाने का क्या कारण था? नारद द्वारा यह वृत्तान्त नारायण से जानने की इच्छा व्यक्त की गई। इस प्रकार के वर्णनों की प्राप्ति भविष्य, ब्रह्मवैवर्त तथा वाराहपुराणों में हुई है।

कूटशब्दः विघ्नविनायक, प्रक्षिप्त, विकृत

प्रस्तावना

भविष्यपुराण

भविष्यपुराण में राजा शतनीक ने महर्षि सुमंतु से विघ्नेश के विघ्नकारण की जिज्ञासावशात् प्रश्न किया कि गणेश द्वारा किसका विघ्न किया गया था जिससे वह विघ्नविनायकनाम्नाभिहित हुए। महर्षि ने उत्तरस्वरूप कहा कि पुरुषों के कौमार लक्षण एवं स्त्रियों के सुकृत करने हेतु विघ्नेश गणपति द्वारा गांगेय का विघ्न किया गया था। उन्होंने आगे कहा कि उस विघ्न के विषय में ज्ञात होने पर रोषयुक्त स्कन्द उनके दशन को उखाड़कर उनके हनन–हेतु समुद्यत हुए थे। देवेश महेश्वर ने कार्तिकेय को निवारित करके उसके रुष्ट होने विषयक प्रश्न किया। तदनन्तर कार्तिकेय ने निज जनक को बताया कि विघ्नेश द्वारा उनके पुरुष–लक्षण को विकृत करने के फलस्वरूप उनमें स्त्रीत्व के गुणों का समावेश एवं पुरुषलक्षणों का अभाव हो गया था। तत्पश्चात् शंकर ने हँसते हुए स्वपुत्र से प्रश्न किया कि उसे उनमें कौन से लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे थे। स्कन्द का कथन था कि उनके हस्त में द्विजलक्षण कपाल बिना विचारे ही संस्थापित होने के कारण वह कपाली नाम्ना अभिहित होते हैं। तत्काल ही वह लक्षण शिव द्वारा क्रोधपूर्वक सागर में प्रक्षिप्त कर दिया गया।[1]

तत्पश्चात् कमलासंस्थित देव ने रुद्र से कहा कि उन्हें भी कपाल में प्रविष्ट होकर कपालव्रतचर्यापूर्वक वहीं संस्थित रहना होगा। मर्त्यलोक में यह व्रत अवश्यमेव अवतरित होगा। ब्रह्मा ने उस व्रत की महत्ता को स्पष्ट करते हुए आगे कहा कि जो उनके इस व्रत को करेंगे, उनके लिए इहलोक एवं परलोक में किञ्चिदपि अप्राप्य नहीं रहेगा। एवंविधिना बहुविध संलाप करके और सुमुखाभिनन्दन सम्पादित करने के पश्चात् अम्बुधि का आह्वान कर बिना विचार करते हुए विधाता ने कहा कि उसके द्वारा नारियों के विलक्षण लक्षण आभूषण का वर्णन किया जाना चाहिए। उन्होंने सागर को कार्तिकेय की उक्ति पर विचार न करते हुए कहने के लिए प्रेरित किया। सागर ने कहा कि उनके नाम ही पुरुष लक्षण होना चाहिए ऐसी देव की प्रतिज्ञा थी, अतएव तथैव होगा। ब्रह्मा ने कार्तिकेय को कहा कि उसके द्वारा उद्धृत गणेश का विषाण उसे अवश्यमेव प्रदान करना चाहिए। होनी को प्रबल मानते हुए उन्होंने कहा कि अवश्यमेव वही घटित हुआ था जो किसी का भवितव्य होता है। ब्रह्मा द्वारा विनायक के बिना ही दैवयोगवशात् कामनारहित होकर उसे ग्रहण करने हेतु कहा गया जो कि उन (कार्तिकेय) के द्वारा सामुद्र परिकीर्तित था। विधाता के अनुसार स्त्री पुरुष का लक्षण श्रेष्ठ सामुद्र विख्यात है। ब्रह्मा के द्वारा कार्तिकेय से उस देव विनायक को सविषाण करने का आग्रह किया गया। तदनन्तर अत्यधिक मत्सरतापूर्वक बाहुलेय (कार्तिकेय) ने बताया कि वह निःसंदिग्धरूपेण उनके वचनानुसार विनायक को विषाण प्रदान करने जा रहे थे। उन्होंने कहा कि यदि वह विषाणरहित हो कर भ्रमण करेगा, तब वह विषाणमुक्त होता हुआ इसे भस्म कर देगा। ''ऐसा ही होना चाहिए'' एवंविध देवेश को कहने के उपरान्त स्कन्द द्वारा उस गणेश के हस्त में विषाण प्रदान कर दिया गया। विनायक के देवेश्वर भी कार्तिकेय के मतानुगामी हो गए थे।[2]

सुमंतु ऋषि ने राजा से कहा कि आज भी विषाण सहित कर वाली प्रतिमा का अवलोकन किया जा सकता था तथा वह महाबाहु एवं महात्मा भीमसूनु के विघ्नार्थ थी।[3] उस सम्पूर्ण कथा के माहात्म्य के विषय में सुमंतु ने कहा कि उनके द्वारा देवों का रहस्य शतानीक को बताया गया था जिससे स्वयं देव भी अनभिज्ञ थे। भूमि पर भी तो यह दुर्लभ ही था। सुमंतु ने प्रसन्नचित्त होने के फलस्वरूप ही यह गुह्य रहस्य शतानीक से कहा था। इस विनायक की कथामृत का कथन तिथि–

संयोग होने पर उनके द्वारा किया गया था। विद्वान् द्वारा इसे वेदज्ञ, ब्राह्मण, स्ववृत्तिस्थित क्षत्रिय, गुणान्वित वैश्य एवं शूद्रों को श्रवण करवाये जाने पर उस (विद्वान्) के लिए इहलोक एवं परलोक में किञ्चिदपि दुर्लभ नहीं होता है। वह नर न तो कभी दुर्गति को प्राप्त होता है और न ही पराभव को। समस्त कार्यों को वह पुरुष निःसंदिग्धरूपेण निर्विघ्नतापूर्वक सिद्ध कर लेता है, साथ ही ऋद्धि, वृद्धि और लक्ष्मी को भी प्राप्त करता है।[4]

ब्रह्मवैवर्त–पुराण

ब्रह्मवैवर्तपुराण में नारद ने संदेहवशात् वेदवेदांगपारंगत नारायण से प्रश्न किया कि त्रिदशेश महात्मा शंकर के पुत्र तथा विघ्नविनाशक गणपति को जो विघ्न उत्पन्न हुआ था, उसका कारण क्या था। नारद ने आश्चर्यपूर्वक कहा कि जब गणपति पूरिपूर्णतम, परात्पर, परमात्मा, गोलोक के स्वामी के स्वांश से पार्वती के गर्भ से प्रादुर्भूत हुए थे, तब उन भगवान् के मस्तक का ग्रह की दृष्टिमात्र से कट जाने का क्या कारण था? नारद द्वारा यह वृत्तान्त नारायण से जानने की इच्छा व्यक्त की गई।[5] तत्पश्चात् नारायण ने नारद से कहा कि विघ्नेश्वर का यह विघ्न जिस कारण से हुआ था, उस पुरातन इतिहास को उन्हें दत्तचित्त होकर श्रवण करना चाहिए। हरि ने कहा कि एक बार भक्तवत्सल शंकर ने माली और सुमाली के हन्ता सूर्य पर अत्यन्त क्रोधसहित त्रिशूल से प्रहार किया। वह त्रिशूल अशनिसदृश ही अमोघ था, अतः उसके आघात से सूर्य संज्ञाशून्य होकर रथ से गिर पड़े। जब कश्यप ने उत्तानलोचनयुक्त मृत पुत्र का अवलोकन किया, तब वह उसे गोद में लेकर पुनः–पुनः अत्यन्त विलाप करने लगे। उस समय समस्त सुरों ने भी भय से कातर होकर हाहाकारसहित विलाप करना आरम्भ कर दिया। समस्त जगत् अन्धकारावृत होकर अन्धीभूत हो गया। निजसुत को कान्तिहीन देखकर ब्रह्मा के पौत्र परमतेजस्वी एवं ब्रह्मतेजसा जाज्वल्यमान कश्यप ने शिव को शाप दे डाला कि जिस प्रकार उनके पुत्र का वक्षःस्थल शंभु के त्रिशूल से विदीर्ण हुआ है, उसी भाँति निःसन्देह उनके पुत्र का मस्तक भी कट जाएगा। कश्यप के शाप के फलस्वरूप गणेश को यह विघ्न हुआ।[6]

वाराहपुराण

वाराहपुराण में वर्णन प्राप्त होता है कि महात्मावान् कुमार ने उत्पन्न होते ही निज कान्ति, दीप्ति, मूर्ति और रूप से समस्त सुरगणों को मोह लिया। महात्मा कुमार के उस अलौकिक रूप को निर्निमेष चक्षुओं से निहारने वाली निज भामिनी उमा देवी का अवलोकन करके क्रोधित महादेव ने स्त्रीस्वभाव को चंचल मानते हुए कुमार के नेत्राकर्षण तथा शोभन रूप का दर्शन करने के अनन्तर[7] गणपति को शापित कर डाला था कि वह गजवक्त्र और प्रलम्ब जठर–युक्त तथा निश्चितरूपेण सर्पों द्वारा उपवीतगमनयुक्त हो जाएगा।[8]

प्रस्तुत पुराण में उल्लेख आया है कि एवंविधिना स्वयं अतिक्रोधान्वित हुए रुद्रदेव द्वारा गणेश भगवान् को शापित किया गया था। तदनन्तर देह को कंपाने वाले महादेव पुनः कुपित हो गए। निज हस्त में आग्नेयास्त्र धारक वह ज्यों–ज्यों अपने तन को कंपाते थे, त्यों त्यों उनके अवयवारुहों से निःसृत जल भूमि पर तथा अन्यत्र पतित हो रहा था।[9]

निष्कर्ष :– श्री गणेश को विघ्नहर्ता के रूप में पुराणों में प्रदर्शित किया गया है। विघ्नहर्ता होने के उपरान्त भी उन्हें विघ्नों का सामना करना पड़ा, यह महत्त्वपूर्ण संदेशों का दिग्दर्शन कराता है। हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार समस्त जीव और देवता भी कर्म और धर्म के वशीभूत होते हैं। गणेश को भी नियति का सामना करना पड़ा, जोकि स्पष्ट करता है कि प्रत्येक व्यक्ति को निजजीवन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, चाहे वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो। जीवन में आने वाली समस्याओं से डरना नहीं चाहिए। धैर्य, बुद्धिमानी और साहस से उनका सामना करना चाहिए। यह लोगों को प्रेरित करता है कि वे स्वजीवन में आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए सदैव तत्पर रहें। देवताओं के जीवन में भी विघ्नों का होना उन्हें मनुष्यों के निकट लाता है। दिव्य होने के उपरान्त भी उन्हें मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। विघ्नहर्त्ता बनने के लिए पहले विघ्नों का सामना करना और उन्हें समझना आवश्यक है। यह प्रक्रिया मनुष्य को और भी महान् बनाती है। इन सिद्धान्तों के माध्यम से गणेश की कथाएँ हमें जीवन की वास्तविकताओं को समझने और उनसे निपटने की प्रेरणा देती हैं।

सन्दर्भ

1. भवि. पु., 2/39/6–11.
2. वही, 2/39/34–45.
3. सविषाणकरोऽद्यापि दृश्यते प्रतिमा नृप।
   भीमसूनोर्महाबाहोर्विघ्नं कर्तुं महात्मनः।। वही, 2/39/46.
4. वही, 2/39/47–51.
5. ब्र.वै.पु., 3/18/1–10.
6. मत्पुत्रस्य यथा वक्षश्छिन्नं शूलेन तेऽद्य वै।
   त्वत्पुत्रस्य शिरश्छिन्नं भविष्यति न संशयः।। वही, 3/18/11
7. वाराह पु., 1/23/15–17.
8. ततः शशाप तं देवो गणेशं परमेश्वरः।
   कुमारगजवक्त्रत्वं प्रलम्बजठरस्तथा।
   भविष्यसि तथा सर्पैरुपवीतगतिर्ध्रुवम्।। वही, 1/23/18
9. वही, 1/23/19–20.